

No. of Printed Pages : 16

MTT-002

**POST GRADUATE CERTIFICATE IN
BANGLA-HINDI TRANSLATION
(PGCBHT)**

Term-End Examination

December, 2025

MTT-002 : बांग्ला-हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन

Time : 3 Hours

Maximum Marks : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग

300 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए : 2×10=20

(क) बांग्ला और हिंदी के बीच शब्द और ध्वनि के स्तर पर क्या समानताएँ और असमानताएँ हैं। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ख) बांग्ला मुहावरों का हिन्दी में अनुवाद करते समय क्या

सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं ? सोदाहरण समझाइए

(ग) बांग्ला और हिन्दी में क्या भाषिक समानताएँ हैं ?

सोदाहरण बताइए।

(घ) बांग्ला में विशिष्ट शब्दों का प्रयोग किस तरह हिन्दी

भाषा की बनावट से भिन्न होता है ? उदाहरण सहित

समझाइए।

2. निम्नलिखित बांग्ला पदों/शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए : 5

(i) बालि

(ii) दूषण

(iii) लालसा

(iv) रसद

(v) निरावरण

(vi) निर्गत

(vii) भावना

(viii) पौराणिक

(ix) गुरुद्वर्ण

(x) स्थापना

3. निम्नलिखित हिंदी शब्दों के बांग्ला पर्याय लिखिए : 5

(i) छोटा

(ii) खोज

(iii) आमतौर पर

(iv) वीरता

(v) अधिकार

(vi) प्रसिद्ध

(vii) औद्योगीकरण

(viii) गरीब

(ix) निर्णय

(x) आसपास

4. निम्नलिखित हिंदी मुहावरों-लोकोक्तियों में से किन्हीं पाँच के बांग्ला समतुल्य बताते हुए उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :

5×3=15

- (i) अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता
- (ii) मान न मान मैं तेरा मेहमान
- (iii) एक तो चोरी ऊपर से सीनाजोरी
- (iv) आसमान सिर पर उठाना
- (v) घाट-घाट का पानी पीना
- (vi) सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता
- (vii) बिन बादल बरसात
- (viii) ऊँट के मुँह में जीरा
- (ix) भाग्यवान का बोझ भगवान उठाता है

5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद कीजिए :

3×15=45

- (क) महाचिनैर शांशहई शहर थेके मात्र नबबुई माईल पूब सागरे डुब दिले ये-केउ भाववे, पेयेछे से

সত্যিকারের নিমজ্জিত স্বর্গ। এ মুহূর্তে সে স্বর্গের দিকে
 নেমে চলেছে ধূসর ছোট একটা সাবমারসিবল। ওপর
 থেকে আসছে সূর্যের সবজেটে- সোনালি রোদ। সাগরের
 মেঝেতে বয়ে যাওয়া স্রোতে দুলছে বাদামি সামুদ্রিক-
 শৈবাল। ডুবোজাহাজ দেখে ছুটে পালিয়ে যাচ্ছে অসংখ্য
 মাছ। দূরে নীল অসীমে হাঁ মেলেছেবিশাল ছায়া, ওটা
 প্রকাণ্ড হলেও নিরীহ ওয়েইল শার্ক বা তিমি হাঙর- চওড়া
 মুখ হাঁ করে প্রাণপণে পেটে পুরছে পানি ও খুদে সব
 প্ল্যাঙ্কটনের ঘোলাটে মেঘ।

সাবমারসিবলের নাকের কাছে কমাণ্ড চেয়ারে বসে আছেন
 ডক্টর উই হ্যানত্যান, মুগ্ধ হয়ে দেখছেন চারপাশের সাগর
 ও বিচিত্র সব প্রাণী।

পাশের চেয়ার থেকে জানাল নারীকণ্ঠ, 'একটু পর পৌছুব
 সরীসৃপের চোয়ালে।'

তথ্যটা পেয়ে মৃদু মাথা দোলালেন ডক্টর হ্যানত্যান। চোখ
 রেখেছেন বাইরের দুনিয়ায়। আর দেখবেনই বা না কেন,
 আগামী পুরো একটা মাস প্রাকৃতিক আলো থেকে বঞ্চিত
 হবেন তিনি। সমুদ্র-শৈবাল ভরা মেঝে পেছনে ফেলে
 সামনে পড়ল প্রবালের রঙিন মাঠ, ওপাশেই ভি আকৃতির
 ক্যানিয়ন। প্রথমে মনে হবে ওই ক্যানিয়ন বড়জোর সরু
 কোনও ফাটল। দেখতে অনেকটা খোলা মুখের মত।

ওটাই সরীসৃপের চোয়াল বা সার্পেন্ট'স জ'।

ভাসতে ভাসতে বা উড়তে উড়তে ক্যানিয়নের ওপরে
 পৌঁছুল সাবমারসিবল। নিচে সরাসরি অতলে নেমেছে
 সাগরের মেঝে।

(স্র) কথা শেষ হলো না প্রবল জোরে একটা থাপ্পড় আছে
 পড়ল শান্তিলালের গালো। ওই চড় খেয়ে আবার হাউমাউ
 করে কেঁদে উঠল।

চোওপ একদম ন্যাকাকান্না কাঁদবি না। এখনো অনেক বাকি। তোকে তুলেছি কোনো রিপোর্ট নেই। আজ জানে মেরে দিয়ে কাল ভোরবেলায় খালে ফেলে দিয়ে আসব হাত পা মুণ্ড সব কেটো।

থানার এসআই প্রাণয় বেশ অবাকা স্যারকে এমন উত্তেজিত হয়ে মারধর করতে ও আগে কখনো দেখিনি। কী কেস সেটাও ঠিক স্পষ্ট বোঝা যাচ্ছে না। থানায় একটা ফাঁকা রুম রয়েছে ওখানে জো হয়। ফার্স্ট থেকে হার্ড সবরকমের ডিগ্রির ব্যবস্থা রয়েছে। দুপুরে স্যার একমাত্র তার প্রিয় কনসেটবল রামধন ছাড়া আর কাউকে অ্যালাউ করেননি। আজ কয়েকঘন্টা ধরে চলছে জেরা, টর্চার। প্রাণজয় একবার গিয়েছিল স্যারের রুমো চেয়ারে বসে থাকা লোকটা প্রায় এলিয়ে পড়েছে মার হজম করতে করতে। মেঝেতে রক্ত নিরুপায় হয়ে স্যারকে বলেই ফেলেছে, স্যার আপনি এত টেনশন নেবেন না। একটু সাবধানো মরেটরে গেলে...

মরেটরে গেলে ভাগাড়ে ফেলে দিয়ে আসবা ঝাঁঝিয়ে উঠেছেন সিদ্ধার্থ। প্রাণজয় সরে এসেছে সেই ঘর থেকে।

থানার ক্যানটিন রুম থেকে এক বালতি ফুটন্ত জল এনে শান্তিলালের পায়ের সামনে এনে রাখল রামধনা শান্তিলালের বুক কেঁপে উঠল। আবার হাউমাউ করে একটা কিছু বলে উঠতে যাচ্ছিল তার আগেই হাটুতে রুলের সপাটে বাড়ি খেয়ে ককিয়ে উঠল।

- (গ) যতদূর জানি, এটাই শৈবালের লেখা সবচেয়ে বড় উপন্যাস। এর ঐতিহাসিক পরিধি বিশাল, কিন্তু এটা প্রথাগত ঐতিহাসিক উপন্যাস নয়। সমসাময়িক বিশ্বসাহিত্যের নব্য ধারা অনুসরণ করে শৈবাল তার আখ্যানের ভেতর বুনে দিয়েছে ঐতিহাসিক সময়ের এক জটিল স্তরভেদ। গল্প শুরু হচ্ছে অত্যাধুনিক কলকাতার এক নাইটক্লাবো সেখানে আমাদের পরিচয় হয় এখনকার গোরার সঙ্গে সে আধুনিক উচ্চবিত্ত ঘরে মানুষ হয়েছে। বাংলা-ইংরেজি মিশিয়ে কথা বলে। স্কুলের অবশ্যপাঠ্য বই-এর বাইরে বাংলা সাহিত্যের কিছুই জানে না। ঘটনাক্রমে সে পড়তে শুরু করল রবীন্দ্রনাথের গোরা। মনে হল, প্রায় তারই মতো এক অনির্দিষ্টপরিচয় আত্মবিস্মৃত যুবকের স্বদেশসন্ধানের কাহিনি

পড়ছে সো তার পর এক সময় সে জড়িয়ে পড়ল টেলিভিশনের জন্য নির্মীয়মান এক মেগাসিরিয়াল প্রযোজনার সঙ্গে, যার নাম গোরা, যার বিষয় শ্রীকৃষ্ণচৈতন্যের জীবনকাহিনি। অন্য এক আখ্যান ঢুকে পড়ল উপন্যাসে তার আখ্যানকার কে? এক তো আছে চৈতন্যের প্রচলিত জীবনবৃত্তান্ত। তার কতটা ইতিহাস, কতটা অতিকথন, কতটা লৌকিক, কতটাই বা অলৌকিক, তা নিয়ে পণ্ডিতেরা অনেক বিশ্লেষণ করেছেন। সেসব আলোচনার সঙ্গে শৈবাল যে যথেষ্ট পরিচিত ছিল, তার সাক্ষ্য এই উপন্যাসে প্রচুর পরিমাণে আছে। বস্তুত, হোসেন শাহের আমলে বাংলার রাজনৈতিক ইতিহাসের এত বিশদ বর্ণনা আমি ইতিহাসের বই-এর বাইরে কোথাও দেখি নি। কিন্তু তারই ভেতর শৈবাল নিয়ে এসেছে আর এক আখ্যানসূত্র। যা হল চৈতন্যের বড় ভাই বিশ্বরূপ রচিত এক পুঁথি, যাতে কি না লিখিত ছিল তাদের পারিবারিক ইতিহাস। সেই পুঁথি বিশ্বরূপ নিজে পুড়িয়ে ফেলেছিল, না কি সযত্নে লুকিয়ে রেখেছিল, সেটা কাহিনির অন্তর্গত একটা রহস্য।

বিশ্বরূপের পুথির সূত্রে আমরা জানতে পারি শ্রীহটে পীর
বুরহানুদ্দিনের দরগায় এক অলৌকিক গর্ভধারণের কাহিনি
তাতেই কি উত্তর পাওয়া যায় সেই বহুচর্চিত প্রশ্নের-নবদ্বীপ
অভিবাসী জগন্নাথ মিশ্রের কনিষ্ঠ পুত্রের অমন দীর্ঘ বলিষ্ঠ
গৌরবর্ণ চেহারা হল কী করে?

(ঘ) বহুদিন পর ফ্ল্যাটে ঢুকে দেখি সবকিছুতে ধুলোর আস্তরণ
পড়ে গেছে, কেমন গুমোট একটা গন্ধ। পূজোর ঘরটার
দরজা খোলা, কাঠের মন্দির-ঘরটা লগুভগু। বেডরুমের
ক্লজিটটাও খোলা। ভেতরের কাপড়চোপড় বাইরে ফেলে
রাখা হয়েছে।

এখানেও তল্লাশি চালিয়েছিল মনিকার বন্দা!

তবে আতঙ্কিত হলাম না। সানগ্লাস আর ক্যাপটা খুলে কাজে
নেমে পড়লাম আমি। ক্লজিটটা ধরে দেয়াল থেকে কিছুটা
সরিয়ে আনলাম, তারপর ডানদিকে কাত করে আস্তে আস্তে
মেঝেতে শুইয়ে দেবার পর মনিকা বুঝতে পারলো আমি কী
করেছি!

ক্লজিটের নিচে, পাঁচ-ছয় ইঞ্চির মতো ফাঁপা বেইজটায় গামটেপ দিয়ে কিছু জিনিস আটকে রাখা আছে।

মুগ্ধ দৃষ্টিতে তাকালো মনিকা। সত্যি বলতে, এই বুদ্ধিটা আমি ওর কাছ থেকেই পেয়েছি-কাঠের মন্দির-ঘরটার বেইজের নিচে চোরাকুঠুরিতে ডলারের বান্ডিল আর স্বর্ণের বারগুলো লুকিয়ে রেখেছিল।

গামটেপগুলো খুলে ফেলতেই বেরিয়ে এলো পলিথিনের জিপারব্যাগে রাখা ডলারের বান্ডিলগুলো 1 আরেকটা জিপারব্যাগে স্বর্ণের বারগুলো রাখা।

ক্লজিটের নিচে বাকি জিনিসটা দেখে সপ্রশ্ন দৃষ্টিতে তাকালো মনিকা। নাইজেলের দেয়া রাইফেলটা টেলিস্কোপ আর সাইলেন্সার লাগানো অবস্থায় গাম টেপ দিয়ে আটকানো আছে ওখানো।

(ভ্র:) আমি রাজপথা অহল্যা যেমন মুনির শাপে পাষণ হইয়া পড়িয়া ছিল, আমিও যেন তেমনি কাহার শাপে চিরনিদ্রিত সুদীর্ঘ অজগর সর্পের ন্যায় অরণ্যপর্বতের মধ্য দিয়া, বৃক্ষশ্রেণীর ছায়া দিয়া সুবিস্তীর্ণ প্রান্তরের বক্ষের উপর দিয়া,

দেশদেশান্তর বেষ্টন করিয়া, বহুদিন ধরিয়া জড়শয়নে শয়ান রহিয়াছি। অসীম ধৈর্যের সহিত ধুলায় লুটাইয়া শাপান্তকালের জন্য প্রতীক্ষা করিয়া আছি। আমিচিরদিন স্থির অবিচল, চিরদিন একই ভাবে শুইয়া আছি, কিন্তু তবুও আমার এক মুহূর্তের জন্যও বিশ্রাম নাই। এতটুকু বিশ্রাম নাই যে, আমার এই কঠিন শুষ্ক শয্যার উপরে একটিমাত্র কচিস্নিগ্ধ শ্যামল ঘাস উঠাইতে পারি; এতটুকু সময় নাই যে, আমার শিয়রের কাছে অতি ক্ষুদ্র একটি নীলবর্ণের বনফুল ফুটাইতে পারি। কথা কহিতে পারি না, অথচ অন্ধভাবে সকলই অনুভব করিতেছি। রাত্রিদিন পদশব্দ। কেবলই পদশব্দ। আমার এই গভীর জড়নিদ্রার মধ্যে লক্ষ লক্ষ চরণের শব্দ অহর্নিশ দুঃস্বপ্নের ন্যায় আবর্তিত হইতেছে। আমি চরণের স্পর্শে হৃদয় পাঠ করিতে পারি। আমি বুঝিতে পারি, কে গৃহে যাইতেছে, কে বিদেশে যাইতেছে, কে কাজে যাইতেছে, কে বিশ্রামে যাইতেছে, কে উৎসবে যাইতেছে, কে শূশানে যাইতেছে। যাহার সুখের সংসার আছে, স্নেহের ছায়া আছে, সে প্রতি পদক্ষেপে সুখের ছবি আঁকিয়া আঁকিয়া চলে; সে প্রতি পদক্ষেপে মাটিতে আশার বীজ রোপিয়া রোপিয়া যায়;

মনে হয়, যেখানে যেখানে তাহার পা পড়িয়াছে, সেখানে যেন মূহূর্তের মধ্যে এক-একটি করিয়া লতা অঙ্কুরিত পুষ্পিত হইয়া উঠিবো। যাহার গৃহ নাই, আশ্রয় নাই, তাহার পদক্ষেপের মধ্যে আশা নাই, অর্থ নাই; তাহার পদক্ষেপের দক্ষিণ নাই, বাম নাই; তাহার চরণ যেন বলিতে থাকে, "আমি চলিই বা কেন, থামিই বা কেন" – তাহার পদক্ষেপে আমার শুষ্ক ধূলি যেন আরো শুকাইয়া যায়।

পৃথিবীর কোনো কাহিনী আমি সম্পূর্ণ শুনিতে পাই না। আজ শত শত বৎসর ধরিয়া আমি কত লক্ষ লোকের কত হাসি, কত গান, কত কথা শুনিয়া আসিতেছি; কিন্তু কেবল খানিকটামাত্র শুনিতে পাই। বাকিটুকু শনিবার জন্য যখন আমি কান পাতিয়া থাকি তখন দেখি, সে লোক আর নাই।

6. निम्नलिखित में से किसी एक अनुच्छेद का बांग्ला में अनुवाद कीजिए : 10

(क) छोटे कद और दुबले शरीर वाली भक्तिन अपने पतले ओठों के कोनों में दृढ़ संकल्प और छोटी आँखों में एक विचित्र समझदारी लेकर जिस दिन पहले-पहले मेरे पास आ उपस्थित हुई थी तब से आज तक एक युग

का समय बीत चुका है। पर जब कोई जिज्ञासु उससे इस संबंध में प्रश्न कर बैठत है, तब वह पलकों को आधी पुतलियों तक गिराकर और चिंतन की मुद्रा में टुड्डी को कुछ ऊपर उठाकर विश्वास भरे कंठ से उत्तर देता है—‘तुम पचै का का बताई—यहै पचास बरिस से संग रहित है।’ इस हिसाब से मैं पचहत्तर की ठहरती हूँ और वह सौ वर्ष की आयु भी पार कर जाती है, इसका भक्तन को पता नहीं। पता हो भी, तो संभवतः वह मेरे साथ बीते हुए समय में रत्ती भर भी कम न करना चाहेगी। मुझे तो विश्वास होता जा रहा है कि कुछ वर्ष और बीत जाने पर वह मेरे साथ रहने के समय को खींचकर सौ वर्ष तक पहुँचा देगी, चाहे उसके हिसाब से मुझे डेढ़ सौ वर्ष की असंभव आयु का भार क्यों न ढोना पड़े।

सेवक-धर्म में हनुमान जी से स्पृद्धा करने वाली भक्तन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या है—नाम है लछमिन अर्थात् लक्ष्मी। पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह

है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी।

(ख) चेतना लौटने लगी। साँस में गंधक की तरह तेज़ बदबूदार और दम घोंटने वाली हवा भरी हुई थी। कोबायाशी ने महसूस किया कि बम के उस प्राण-घातक धड़ाके की गूँज अभी-भी उसके दिल में धँस रही है। भय अभी-भी उस पर छाया हुआ है। उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा है। उसे साँस लेने में तकलीफ होती है, उसकी साँस बहुत भारी और धीमी चल रही है।

हारे हुए कोबायाशी का जर्जर मन इन दोनों अनुभवों से खीझकर कराह उठा। उसका दिल फिर गुफ़लत में डूबने लगा। होश में आने के बाद, मृत्यु के पंजे से छूटकर निकल आने पर जो जीवनदायिनी स्फूर्ति और शांति उसे मिलनी चाहिए थी, उसके विपरीत यह अनुभव होने से ऊबकर, तन और मन की सारी कमजोरी के साथ वह चिढ़ उठा। जीवन कोबायाशी के

शरीर में अपने अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए विद्रोह करने लगा। उसमें बल का संचार हुआ।

कोबायाशी ने आँखें खोलीं। गहरे कुहासे की तरह दम घुटाने वाला ज़हरीला धुआँ हर तरफ छाया हुआ था। उसके स्पर्श से कोबायाशी को अपने रोम-रोम में हज़ारों सुइयाँ चुभने का-सा अनुभव हो रहा था। रोम-रोम से चिनगियाँ छूट रही थीं। उसकी आँखों में भी जलन होने लगी; पानी आ गया। कोबायाशी ने घबराकर आँखें मीच लीं।

लेकिन आँखें बंद कर लेने से तो और भी ज़ियादा दम घुटता है। कोबायाशी के प्राण घबरा उठे। वे कहीं भी सुरक्षित न थे। मौत अँधेरे की तरह उस पर छाने लगी। यह हीनावस्था की पराकाष्ठा थी।

× × × × ×